



प्रवासन और सुरक्षा

सुनील कुमार गौतम

पी. एचडी शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,

स. प. चौ. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

डॉ गायत्री (सह आचार्य).

राजनीति विज्ञान विभाग, स. प. चौ. राजकीय महाविद्यालय

अजमेर, राजस्थान, भारत।

शोध सार

प्रवासन मानव समाज की मूल प्रवृत्ति है। मानव आदिकाल से ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर भोजन, वस्त्र, जल, आवास आदि के लिए अथवा अवसर की प्राप्ति के लिए जाता रहा है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मानव के प्राचीन काल से वर्तमान समय तक के प्रवासन की प्रवृत्ति, विशेषकर सुरक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन किया है तथा भारत में ब्रिटिश काल से आजादी के समय तक एवं आजादी के बाद के प्रवासन के कारण और परिणाम का अध्ययन किया गया है। इस शोध का उद्देश्य उन परिस्थितियों की पहचान करना है जिनके तहत प्रवासन को एक सुरक्षा मुद्दा माना जा सकता है। निष्कर्षों से पता चलता है कि प्रवासन का राज्यो की विदेश नीति और हिंसक संघर्षों से गहरा संबंध है। भारत के सन्दर्भ में अवैध प्रवासन, सीमा प्रबंधन और आतंकवाद जैसी समस्याएं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रमुख चुनौतियाँ हैं। प्रवासियों को अक्सर मानवाधिकार उल्लंघन, शोषण और तस्करी जैसे सुरक्षा जोखिमों का सामना करना पड़ता है। कुछ परिस्थितियों में प्रवासी अल्पसंख्यक समूहों के प्रति अत्यधिक पूर्वाग्रह भी पाया जाता है, जिससे उनको विभिन्न प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है।

मुख्य शब्द: सुरक्षा, प्रवासन, शरणार्थी, प्रवृत्ति

परिचय :-

प्रवासन मानव एवं मानव समाज की एक प्रमुख विशेषता है। आदिकाल से ही मानव में प्रवासन की प्रवृत्ति पायी जाती है। ऐसा माना जाता है कि सर्वप्रथम आधुनिक मानव का विकास पूर्वी अफ्रीका में हुआ जो आज तक चला आ रहा है। आज भी बड़े पैमाने पर प्रवासन की प्रवृत्ति पायी जाती है। समय के साथ प्रवासन को प्रेरित करने वाले कारकों का विस्तार होता गया। आदि मानव में प्रवासन की प्रवृत्ति अनुकूल जलवायुविक दशाओं एवं खाद्यान्न उपलब्धता वाले स्थानों की तरफ थी तथा वर्तमान समय में भी यह एक प्रेरक कारण है। परन्तु इसमें अनेक कारक जुड़ गये, जैसे- बेहतर अवसर की तलाश, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, रोजगार आदि। लेकिन सुरक्षा का कारण इन सब में सबसे प्रमुख है। प्रवासन अक्सर सुरक्षा के लिए एक चुनौती बनता है जिससे देशों में सुरक्षा की धारणा बदलती है, राष्ट्रवादी आन्दोलन उभरते हैं और राजनीतिक तनाव बढ़ता है। कई स्थितियों में प्रवासन अधिक होने पर मूलनिवासियों के रोजगार पहचान और संस्कृति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

जिसके कारण मूलनिवासियों द्वारा प्रवासियों का विरोध किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप प्रवासियों की सुरक्षा पर संकट खड़ा हो जाता है।

प्राचीन काल से वर्तमान तक प्रवास को मुख्य रूप से भौतिक, सांस्कृतिक विकास, औपनिवेशिक प्रभाव और आधुनिक आर्थिक सामाजिक कारकों के आधार पर बांटा जा सकता है, जिसमें प्रागैतिहासिक काल में मानव समूहों का फैलाव, औपनिवेशिक काल में अन्तरमहाद्वीपीय प्रवास और वर्तमान में आर्थिक अवसरों और संघर्षों के कारण होने वाले बड़े पैमाने के विस्थापन शामिल हैं, जिससे मानव समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा है। (1)

प्रवासन को विभिन्न कालों में दर्शाया गया है-

* प्रागैतिहासिक काल :-

इसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

• प्रागैतिहासिक मानव प्रवास : आधुनिक मानवों ने अफ्रीका से निकलकर एशिया, यूरोप और अनंत: अमेरिका तक प्रवास किया, जो शिकारी- संग्राहक जीवनशैली पर आधारित था।

• नवपाषाण क्रांति - कृषि के विकास के साथ लोग स्थायी बस्तियों में बसने लगे, जिससे बड़े जनसंख्या, आंदोलनों और भाषा परिवारों के प्रसार की शुरुआत हुई।

* प्राचीन और मध्यकाल - :स्लाव, नॉर्स, तुर्किक और मंगोल जैसे समूहों का बड़े पैमाने पर विस्तार, जिसने नए क्षेत्रों को बसाया और साम्राज्यों का निर्माण किया।

* औपनिवेशिक काल :-

इसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

• अन्तरमहाद्वीपीय प्रवास : यूरोपीय साम्राज्यों के उदय के साथ, अन्तरमहाद्वीपीय पैमाने पर प्रवास तेज हुआ, जिसमें बड़े पैमाने पर लोगों को नए उपनिवेशों में स्थानान्तरित किया गया।

• भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रभाव - ब्रिटीश काल में आर्थिक और राजनीतिक कारणों से बड़े पैमाने पर आन्तरिक और बाहरी प्रवास हुआ, जैसे 1947 का भारत -पाकिस्तान विभाजन, जो मानव इतिहास का सबसे बड़ा सामूहिक प्रवास था।

* आधुनिक और समकालीन काल

आर्थिक और सामाजिक प्रवास :- लोग बेहतर रोजगार, शिक्षा और जीवनस्तर के लिए तेजी से बढ़ते क्षेत्रों के ओर जा रहे हैं, जबकि गरीबी और जलवायु परिवर्तन उन्हें पलायन के लिए मजबूर कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास:- नौकरी, शिक्षा और सुरक्षा के लिए देशों के बीच लोगों का आवागमन जारी है, जिसके साथ नस्लीय भेदभाव और सांस्कृतिक एकीकरण जैसी चुनौतियां भी जुड़ी हैं। (2)

प्रवासन : एक सुरक्षा मुद्दा :- प्रवासन एक जटिल मुद्दा है जो सुरक्षा के कई पहलुओं से जुड़ा है, यह प्रवासियों के लिए मानव सुरक्षा (मानवाधिकार, शोषण, हिंसा) और गंतव्य देशों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा (अवैध प्रवेश, आतंकवाद, सामाजिक सामंजस्य) दोनों के लिए चुनौतियां और अवसर पैदा करता है, जिसमें आर्थिक लाभ, सामाजिक एकीकरण और सुरक्षा प्रमुख मुद्दे हैं यद्यपि व्यवस्थित और मानवीय प्रवासन, आर्थिक विकास और नवाचार को बढ़ावा देते हैं, लेकिन अवैध प्रवासन आतंकवाद और घुसपैठ जैसे गंभीर राष्ट्रीय जोखिमों को जन्म दे सकता है। प्रवासन और सुरक्षा के सम्बन्ध को निम्नलिखित दो बिन्दुओं से समझ सकते हैं-

1. प्रवासियों की मानव सुरक्षा:

- अनियमित मार्गों से प्रवास करने वाले लोग मानवाधिकारों के उल्लंघन, दुर्व्यवहार हिंसा और शोषण का शिकार होते हैं, जिससे उनकी जान को खतरा होता है। अपनी जान की सुरक्षा के लिए ये लोग पलायन करते हैं लेकिन गंतव्य देशों में भी इनको भेदभाव का सामना करना पड़ता है। जिसमें उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं सामाजिक सुरक्षा और रोजगार तक पहुंचने में कठिनाई होती है, खासकर जब वे कानूनी रूप से अधिकृत न हो, जिससे उन्हें अमानवीय व्यवहार और हिंसा का खतरा बढ़ जाता है, साथ ही भाषा और सांस्कृतिक बाधाएँ उनके अधिकारों के हनन को बढ़ा देती हैं; खासकर महिलाओं के लिए, जैसा कि कोविड-19 महामारी ने उजागर किया। (3)

कार्यस्थल, स्कूल, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक परिवेश में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जो उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं। गलत सूचनाओं और भ्रामक विचारों में विदेशी - द्वेष बढ़ता है, जिससे उन्हें ऑनलाइन अभद्र भाषा और शारीरिक हिंसा भी झेलनी पड़ सकती है। बिना दस्तावेज वाले प्रवासी, नियोक्ताओं और आपराधिक गिरोहों द्वारा शोषण के शिकार होते हैं। मानव तस्करी और यौन शोषण का खतरा बहुत अधिक होता है, खासकर महिलाओं और बच्चों के लिए। अवैध स्थिति के कारण उन्हें हिरासत में रखा जा सकता है और कानूनी सहायता के बिना अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। आवश्यक दस्तावेजों की कमी से वे अपने अधिकारों का दावा करने में असमर्थ होते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं सामाजिक सुरक्षा लाभों (जैसे - भोजन, आवास) और शिक्षा तक पहुँच में कमी का भी सामना करना पड़ता है। स्थानीय भाषा और रीति-रिवाजों की जानकारी न होने के कारण उन्हें आवश्यक सेवाओं से वंचित रहना पड़ता है। असुरक्षित कार्य स्थितियाँ, न्यूनतम सुरक्षा मानकों का अभाव और कम मजदूरी का सामना करना पड़ता है। कोविड-19 महामारी के दौरान इन चुनौतियों में वृद्धि हुई है। मेजबान देशों में पहचान के खतरे और आर्थिक प्रतिस्पर्धा की भावना से सामाजिक तनाव बढ़ सकता है, जिससे प्रवासियों के खिलाफ नकारात्मक धारणाएँ और हिंसा फैल सकती है

प्रवासियों की मानव सुरक्षा का अर्थ केवल उन्हें शारीरिक खतरों से बचाना नहीं है, बल्कि उन्हें एक ऐसा गरिमापूर्ण वातावरण देना है जहाँ वे भय, अभाव और अपमान से मुक्त रह सकें।

प्रवासियों की सुरक्षा को इन निम्नलिखित सात श्रणियों में देखा जाता है।(4)

*आर्थिक सुरक्षा –

प्रवासियों की आर्थिक सुरक्षा का अर्थ प्रवासियों की वित्तीय स्थिरता और अवसरों से जोड़ना है जिसमें सरकारी योजनाओं के तहत बीमा व सामाजिक सुरक्षा तथा भेदभाव रहित मानवाधिकारों की रक्षा शामिल है, ताकि वे सुरक्षित रूप से आय अर्जित कर सकें और अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। प्रवासी की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कौशल विकास, वित्तीय समावेशन, मजबूत सामाजिक सुरक्षा जाल और शोषण के खिलाफ कानूनी सुरक्षा की आवश्यकता होती है, ताकि प्रवासी अपनी क्षमता का पूरा उपयोग कर सकें और सुरक्षित जीवन जी सकें।

* खाद्य सुरक्षा-

प्रवासन और खाद्य सुरक्षा आपस में जुड़े हुए हैं, जहाँ प्रवासन अक्सर बेहतर रोजगार और आय के लिए होता है, जिसमें परिवारों को भोजन खरीदने की क्षमता मिलती है, लेकिन इससे ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम व मानव पूंजी की कमी भी हो सकती है; वहीं खाद्य असुरक्षा भी लोगों को पलायन करने के लिए भी मजबूर करती है, जिससे प्रवासियों और उनके पीछे छोटे परिवारों दोनों के लिए चुनौतियाँ होती हैं और इन दोनों मुद्दों को हल करने के लिए नीतियों में रोजगार सामाजिक सुरक्षा और ग्रामीण विकास पर ध्यान देना जरूरी है जैसा कि भारत में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के द्वारा किया जाता है।

* स्वास्थ्य सुरक्षा:- प्रवासन और स्वास्थ्य सुरक्षा आपस में गहराई में जुड़े हैं जहाँ प्रवासन के दौरान और बाद में मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच रहने की स्थिति और सामाजिक आर्थिक कारक प्रवासियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। प्रवासियों को अक्सर भाषाई बाधाओं, खराब कामकाजी परिस्थितियों और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता है, जिससे मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ बढ़ सकती हैं, और उनके लिए सुरक्षित व किफायती स्वास्थ्य देखभाल करना जरूरी है।

* पर्यावरणीय सुरक्षा :- प्रवासन और पर्यावरणीय सुरक्षा आपस में जुड़े हैं, जहाँ जलवायु परिवर्तन और विपरीत पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण लोगों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है, जिससे विस्थापन बढ़ता है और नई सुरक्षा चुनौतियाँ पैदा होती हैं जबकि दूसरी दूसरी ओर पर्यावरणीय संरक्षण भी इन पर्यावरणीय समस्याओं को कम करके लोगों को सुरक्षित भविष्य प्रदान करने और स्थायी जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। सूखा, बाढ़ समुद्र के स्तर में वृद्धि और भूमि क्षरण जैसे प्राकृतिक और मानव जनित पर्यावरणीय आपदाएँ लोगों को विस्थापित करती हैं।

* व्यक्तिगत सुरक्षा :- प्रवास की प्रक्रिया में व्यक्ति अक्सर अपरिचित रास्तों और सीमाओं से गुजरता है। इस दौरान उन्हें हिंसा, शोषण और मानव तस्करी जैसे खतरों का सामना करना पड़ सकता है। विशेष रूप से अवैध प्रवासन में व्यक्ति की शारीरिक सुरक्षा सबसे अधिक जोखिम में होती है।

* सामुदायिक सुरक्षा :- प्रवासन और सामुदायिक सुरक्षा का अर्थ है कि जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं, तो उनकी संस्कृति, पहचान और मूल्यों को सम्मान मिले और उन्हें किसी तरह के नुकसान से बचाया जाए जिसमें प्रवासियों को नई संस्कृति में घुलने-मिलने और अपनी विरासत को बनाए रखने के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण देना शामिल है,

ताकि वे सशक्त महसूस करे और सामाजिक सामंजस्य बना रहे। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि उनकी सांस्कृतिक पहचान पर हमला न हो और उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहने का अवसर मिले। नई संस्कृति में ढलते समय भ्रम, अकेलापन और अलगाव महसूस हो सकता है अपनी संस्कृति खोने का दर्द और नई संस्कृति में पूरी तरह समाहित नहीं हो पाना तथा मुख्य धारा की संस्कृति द्वारा प्रवासियों के साथ भेदभाव और पूर्वाग्रह की भावना होना सम्मिलित है।

* राजनीतिक सुरक्षा: प्रवासियों के लिए राजनीतिक सुरक्षा का अर्थ है उनके मानवाधिकारों, नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना जिसमें भेदभाव, शोषण और दुर्व्यवहार से बचाव शामिल है, और उन्हें गंतव्य देश की राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं में सुरक्षित रूप से भाग लेने का अवसर देना जैसे- उचित कानूनी सुरक्षा प्रदान करना ताकि वे जबरन श्रम या तस्करी जैसी समस्याओं से बच सकें और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकें, जिसमें मजबूत राष्ट्रीय और स्थानीय नीतियां, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और मानवाधिकार आधारित दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं। प्रवासियों के लिए राजनीतिक सुरक्षा का मतलब केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं, बल्कि उनके अधिकारों की गारन्टी, उन्हें समाज में शामिल करना और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भी सम्मिलित करना है, जो एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के लिए आवश्यक है।

2. गंतव्य देशों में प्रवासियों के कारण सुरक्षा की उभरती चुनौतियां – गंतव्य देशों में प्रवासियों से जुड़ी सुरक्षा चुनौतियों में सामाजिक एकीकरण में बाधाएं (नक्सलवाद, भाषा की समस्या), श्रम शोषण, बुनियादी सेवाओं पर दबाव और चरमपंथ व अस्थिरता का खतरा शामिल हैं, जिससे सांस्कृतिक तनाव, अपराध और कभी-कभी राष्ट्रीय सुरक्षा को भी चुनौती मिलती है, जिससे प्रवासियों के लिए असुरक्षा और प्रवासी राज्य में विभाजन बढ़ता है। स्थानीय समुदायों के साथ घुलने-मिलने में कठिनाई होती है, जिससे अलगाव और घृणा बढ़ सकती है। नई भाषा और रीति-रिवाजों को न समझपाने से गलतफहमी और तनाव पैदा होता है। बड़ी संख्या में प्रवासियों के कारण आवास, स्वास्थ्य सेवा और अन्य सेवाओं पर दबाव पड़ता है, जिससे स्थानीय आबादी के साथ टकराव हो सकता है। कुछ मामलों में प्रवासन आन्दोलनों का उपयोग कट्टरपंथी विचारधाराओं के प्रसार के लिए किया जा सकता है, जिससे सुरक्षा चिंताएं बढ़ती हैं। अवैध प्रवासन राज्य की संप्रभुता को खतरा पैदा करता है, अवैध प्रवासन अक्सर मानव तस्करी जैसे संगठित अपराधों से जुड़ा होता है। (5) कुछ सुरक्षा विश्लेषकों का मानना है कि प्रवासन प्रवाह संभावित रूप से आतंकवादियों के लिए देश में प्रवेश करने, कट्टरपंथी विचारधारा फैलाने और आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने का एक जरिया हो सकता है। बड़ी संख्या में प्रवासियों के आगमन से स्थानीय संसाधनों पर दबाव पड़ सकता है। इससे स्थानीय और प्रवासी समुदायों के बीच भेदभाव और कभी-कभी हिंसा या संघर्ष की स्थिति पैदा हो सकती है। कुछ मामलों में अवैध प्रवासी धोखाधड़ी से पहचान पत्र प्राप्त करने या राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में शामिल होने का प्रयास कर सकते हैं, जिससे देश की आन्तरिक सुरक्षा और अखण्डता को खतरा हो सकता है। (6) प्रवासन से गंतव्य देश की जनसंख्या की आयु संरचना और लिंग अनुपात में परिवर्तन आता है। आमतौर पर युवा और कार्यशील पुरुष अधिक प्रवास करते हैं

जिससे गंतव्य देशों में युवाओं की संख्या बढ़ती है। प्रवासन गंतव्य देशों में विशेषकर विकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारक बन गया है। अचानक जनसंख्या बढ़ने से आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ जाता है जिससे प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। गंतव्य देशों में प्रवासियों के कारण प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित हैं

सामाजिक और सांस्कृतिक टकराव :- स्थानीय आबादी को अपनी पहचान खतरे में महसूस हो सकती है, जिससे विदेशी द्वेष और भेदभाव बढ़ता है, जो अक्सर हिंसा में बदल जाता है

* संसाधनों पर दबाव:- भोजन, पानी और रोजगार जैसे संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव महसूस किया जा सकता है, जिससे स्थानीय और प्रवासी समुदायों के बीच तनाव बढ़ता है।

* कानून और व्यवस्था की समस्याएँ - बड़े पैमाने पर अनियमित प्रवास कानून और व्यवस्था पर दबाव डाल सकता है। अवैध गतिविधियों, जैसे धोखाधड़ी वाले पहचान पत्र और हथियारों की तस्करी के मामले बढ़ सकते हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियाँ पैदा करते हैं।

* संगठित अपराध :- प्रवासी तस्करी और मानव तस्करी उद्योग जैसे संगठित अपराध से जुड़ सकते हैं जिससे कानून और व्यवस्था के लिए वास्तविक खतरा पैदा हो सकता है।

सामाजिक और साम्प्रदायिक तनाव:- जनसांख्यिकी में बदलाव और, संसाधनों पर दबाव स्वदेशी समुदायों और प्रवासियों के बीच तनाव बढ़ा सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप कभी - कभी साम्प्रदायिक हिंसा या सामाजिक विभाजन हो सकता है

* सार्वजनिक स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे पर दबाव :- बढ़ती प्रवासी आबादी स्वास्थ्य प्रणालियों और अन्य सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे पर दबाव डाल सकती है। प्रवासियों में संचारी रोगों का जोखिम भी अधिक हो सकता है, जिससे व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं।

* सामाजिक और जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ:- जनसांख्यिकीय पैटर्न में बदलाव के कारण सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न होता है। जैसे- पूर्वोत्तर राज्यों में। स्थानीय समुदायों और प्रवासियों के बीच संसाधनों और प्रभुत्व को लेकर टकराव होता है। 'लव जिहाद' और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण सामाजिक तनाव को बढ़ावा देते हैं।

* राजनीतिक अस्थिरता:- संसाधनों और अवसरों के लिए संघर्ष से राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है। वोट बैंक की राजनीति के लिए प्रवासियों का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे चुनावी प्रक्रिया प्रभावित होती है। महिला एवं बाल तस्करी जैसी घटनाएँ में वृद्धि होती है।

* भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र पर असर :- प्रवासियों द्वारा नदी किनारे या वन क्षेत्रों में अवैध बस्तियाँ बसाने से भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होते हैं। अधिक प्रवासन से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता है जिससे आवासों का विनाश, जैव विविधता का नुकसान और आक्रामक प्रजातियों का फैलाव शामिल है, क्योंकि प्रवासी अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए नये इलाकों में बसते हैं और अधिक ऊर्जा और संसाधनों का उपयोग करते हैं जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाते हैं।

निष्कर्ष

प्रवासन और सुरक्षा का निष्कर्ष यह है कि प्रवासन एक जटिल वैश्विक घटना है जिसके कारण सुरक्षा चुनौतियाँ (जैसे- अवैध घुसपैठ, संसाधनों दबाव और अवसर (आर्थिक योगदान) दोनों पैदा होते हैं, जिससे मानव सुरक्षा, सामाजिक सामंजस्य और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक संतुलित बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें प्रवासियों के अधिकारों की रक्षा के साथ- साथ सीमा प्रबंधन और बेहतर नीतियाँ शामिल हो। इस शोध से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए

.दोहरा प्रभाव - प्रवासन जहाँ एक ओर आर्थिक विकास और श्रम आपूर्ति में सहायक, है, वहीं दूसरी ओर यह अनियंत्रित होने पर राष्ट्रीय और सामाजिक सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ भी पैदा कर सकता है। ओर में आवश्यकता को हटाना है।

* मानव सुरक्षा बनाम राष्ट्रीय सुरक्षा :- प्रवासन के दौरान प्रवासियों की मानव सुरक्षा का मुद्दा सर्वोपरि है, जिसमें उन्हें शोषण, तस्करी और हिंसा से बचाना शामिल हैं। साथ ही, देशों के लिए अपनी सीमाओं की सुरक्षा अवैध और आव्रजन को रोकना एक बड़ी प्राथमिकता होती है।

* अवैध प्रवासन और अपराध:- अनियंत्रित प्रवासन से मानव तस्करी, घुसपैठ और आतंकवाद जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं, जो किसी भी देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं।

* सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिरता :- बड़े पैमाने पर होने वाला प्रवासन कभी - कभी स्थानीय आबादी में अपनी संस्कृति और नौकरियों के खोने का डर पैदा करता है जिससे सामाजिक तनाव और संघर्ष की स्थिति बन सकती है।

* नीतिगत समाधान:- निष्कर्षतः प्रवासन की समस्या का समाधान केवल सुरक्षा बलों द्वारा नहीं बल्कि एक व्यापक दृष्टिकोण से संभव है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कुशल प्रवासन नीतियाँ और स्थानीय समुदायों की भागीदारी शामिल हों। संक्षेप में प्रवासन और सुरक्षा के बीच संतुलन तभी संभव है जब मानवाधिकार की रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के बीच स्पष्ट तालमेल हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चांदना, आर. सी. (2009), कल्याणी पब्लिकेशन, 'नई दिल्ली
2. एक सुरक्षा मुद्दा ? , ग्लोबल पॉलिसी जर्नल (2004)
3. आचार्य ए. (1997), तीसरी दुनिया और सुरक्षा अध्ययन ।
4. SOAS Research online (sos.fbi.gov)' प्रवासन और सुरक्षा'
5. SPAST Reports (<http://spast.org>), प्रवासन और सुरक्षा के बीच संबंध'
6. SSRN elibrary (<https://Papers-rrrn.com>) चिन्मय तुम्बे द्वारा भारत प्रवास ग्रन्थ सूची'
7. United netioni Migration Network (un.org/en/global-issues/migration)